राठौर परिवार : परिचय

Duration : 02.11 **Transcribed words :** 524

- संगीत -

00.08 हेमन्त सिंह राठौर बीका : मेरा नाम हेमन्त सिंह राठौर है... हम लोग बीकानेर से रहने वाले हैं...

00.13 राजेन्द्र कुमारी : मैं राजेन्द्र कुमारी हूँ... और मैं जयपुर में रहती हूँ... और मेरी शादी को 35 ईयर्स हो गये हैं और शादी के बाद मैं जयपुर आई...

00.25 हेमन्त सिंह राठौर बीका : हमारे दो लडके हैं... एक लड़का बॉम्बे में सैटल है और एक छोटा है वो दिल्ली, अभी एम. बी. ए. कर रहा है... बडे लड़के की भी शादी हो चुकी है... एक पोता है हमारे... हम लोग बीकानेर के रहने वाले हैं... हमारे गाँव का नाम बेगुसर है...

00.43 राजेन्द्र कुमारी : मेरे हस्बैंड राठौर हैं और राठौरों में बीका राठौर हैं, जो कि बीकानेर मेन फैमली है... राव बीका ने बीकानेर बसाया था... उसके बाद से वहाँ के सब राठौर उनके वंशज, बीका राठौरस हैं... तो बाद में जैसे जैसे पीढियाँ आगे बढीं, तो सबको अलग अलग एरियाज दे दिये गये... तो वो उनके नाम से शाखाएँ निकल गईं...

01.10 हेमन्त सिंह राठौर बीका : मैं मेरे ग्रैंड फादर हैं, ये उनकी पेंटिंग हैं... जब वो शुरू में, उनकी शादी हुई थी, उस टाईम पे उनकी ये पेंटिंग तैयार की गई थी... ये हमारी बहुत पुरानी पेंटिंग है...

01.27 हेमन्त सिंह राठौर बीका : ये मेरे फादर इन लॉ हैं... मेरे ससुर हैं... ये उनकी फोटो है...

01.32 हेमन्त सिंह राठौर बीका : ये मेरे लडके की फोटो हैं... और उसके साथ ये मेरी बहू... और ये बिलकुल ट्रैडिश्नल यूनिफार्म में है... ट्रैडिशनल पहनावा पहने हुए है...

01.42 राजेन्द्र कुमारी : ये हमारे ट्रैडिशनल ड्रैस है... इसको लहँगा, कुर्ती, काँचली और ओढ़ना कहते हैं... मतलब पूरे को एक पोशाक के रूप में जानी जाती है ये.... ये पौशाक है... तो ये प्लेन है... अदरवाईज काम वाली होती है... ज़री और सलमा की... जो शादियों में और पहनते हैं...

02.04 राजेन्द्र कुमारी : जैसे मैंने पहन रखा है ये, ये टीका नहीं है, रखडी है... जिसको हम राखडी कहते हैं... और आईवरी के चूड़े पहने जाते हैं... जैसे मैंने ये एक पीस पहन रखा है...

02.17 राजेन्द्र कुमारी : हम लोग, हमारी मदर टंग है मारवाड़ी... तो हम मारवाड़ी बोलते हैं... और विश करने का तरीका भी, हम नमस्ते नहीं कहते... और, खम्मा घणी कहते हैं... तो बच्चे हमें मिलते हैं तो धोक लगा के खम्मा घणी करते हैं... वैसे ही हम अपने बड़ों को विश करते हैं... खम्मा घणी हुकुम...

02.38 (मंदिर में घंटी बजने की आवाज)

02.39 राजेन्द्र कुमारी : हिन्दूज हैं हम... राजपूत्स हैं... देवी की पूजा करते हैं... हमारी आराध्य देवी दुर्गा होती हैं...

02.47 राजेन्द्र कुमारी : ये मंदिर रखते हैं हम एक घर में... इसमें ये त्रिशूल है जो, ये दुर्गा का रूप है, माता जी कहते हैं हम... माता जी का मंदिर है... और ये हमारी कुलदेवी हैं... ये नागणेचा माता जी हैं... उस रूप में हम पूजते हैं... और बाकी सभी देवी देवताओं की भी मूर्तियाँ रखी, फोटोग्राफ्स और मूर्तियाँ हैं... जैसे गणेश जी, लक्ष्मी जी, दुर्गा जी, सरस्वती, शिव जी, सभी हैं... तो रोज मैं यहाँ पूजा करती हूँ... दिया करके, अगरबत्ती... और सब ये करते हैं...